श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

विष्णु पादादि केशां(न्)त वर्णन स्तोत्रं(म्)

लक्ष्मीभर्तुर्भुजाग्रे कृतवसति सितं(यँ) यस्य रूपं(वँ) विशालं(न्),

नीलाद्रेस्तुं(ङ्)गशृं(ङ्)गस्थितमिव रजनीनाथबिं(म्)बं(वँ) विभाति ।

पायान्नः(फ्) पां(ञ्)चजन्यः(स्) स दितिसुतकुलत्रासनैः(फ्) पूरयन्स्वैर्-

-निध्वानैर्नीरदौघध्वनिपरिभवदैरं(म्)बरं(ङ्) कं(म्)बुराजः ॥ 1 ॥

शंखों के राजा पाञ्चजन्य हमारी रक्षा करें; पाञ्चजन्य जो भगवान विष्णु के हाथ में है, जो आकार में बहुत बड़ा है और नीले पर्वत की ऊंची चोटी पर चंद्रमा की तरह चमकता है, जो काले बादलों की गड़गड़ाहट से भी बढ़कर अपनी ध्वनि से आकाश को भर देता है और जो असुरों के दिलों में भय पैदा करता है

आहुर्यस्य स्वरूपं(ङ्) क्षणमुखमखिलं(म्) सूरयः(ख्) कालमेतं(न्)

ध्वां(न्)तस्यैकां(न्)तमं(न्)तं(यँ) यदपि च परमं(म्) सर्वधाम्नां(ञ्) च धाम ।

चक्रं(न्) तच्चक्रपाणेर्दितिजतनुगलद्रक्तधाराक्तधारं(म्)

शश्वन्नो विश्ववं(न्)द्यं(वँ) वितरतु विपुलं(म्) शर्म धर्मां(म्)शुशोभम् ॥ 2 ॥

भगवन विष्णु का चक्र हमें हमेशा शांति और आनंद प्रदान करे ; चक्र जिसके बारे में बुद्धिमान लोग कहते हैं कि यह एक क्षण से लेकर अनंत काल तक के समय का प्रतीक है, जो अंधकार को समाप्त करता है, जो सभी चमकदार वस्तुओं से अधिक चमकीला है, जो सूर्य की तरह चमकता है और जिसका छोर असुरों के शरीर के रक्त से रंगा हुआ है

अव्यान्निर्घातघोरो हरिभुजपवनामर्शनाध्मातमूर्ते-

-रस्मान्विस्मेरनेत्रत्रिदशनुतिवचः(स्) साधुकारैः(स्) सुतारः ।

सर्वं(म्) सं(म्)हर्तुमिच्छोररिकुलभुवन स्फारविष्फारनादः(स्)

सं(यँ)यत्कल्पां(न्)तसिं(न्)धौ शरसलिलघटावार्मुचः(ख्) कार्मुकस्य ॥ 3 ॥

शत्रुओं के संपूर्ण समूह को मारने की इच्छा रखने वाले भगवान् विष्णु के धनुष से निकलने वाली भयानक ध्वनि हमारी रक्षा करे; वह धनुष जो हरि की भुजाओं की वायु से आकार में बड़ा हो जाता है, जिसकी जय

जय कार देवता आश्चर्य भरी नजरों से करते हैं , जिसकी ध्वनि गड़गड़ाहट की भांति दूर-दूर तक फैलती है और जो युद्ध में बाणों की उसी प्रकार वर्षा करता है जैसे किसी कल्प के अंत में जलप्रलय (प्रलय के समुद्र) पर बादल की वर्षा होती है

जीमूतश्यामभासा मुहुरपि भगवद्बाहुना मोहयं(न्)ती

युद्धेषूद्धूयमाना झटिति तटिदिवालक्ष्यते यस्य मूर्तिः ।

सोऽसिस्त्रासाकुलाक्षत्रिदशरिपुवपुः(श्) शोणितास्वादतृप्तो

नित्यानं(न्)दाय भूयान्मधुमथनमनोनं(न्)दनो नं(न्)दको नः ॥ 4 ॥

भगवान विष्णु की तलवार, नंदक, हमें शाश्वत आनंद दे; नंदक जो मधु के संहारक भगवान विष्णु के ह्रदय को आनंद प्रदान करती है। तलवार जिस की भुजा बादल के समान गहरी नीली है, जो अक्सर युद्धों के दौरान लहराने पर बिजली की अचानक चमक के रूप में देखी जाती है और असुरों को भ्रमित करती है और जो भय के कारण डगमगाती हुयी आँखों से युक्त असुरों के रक्त का स्वाद चखने पर गर्व करती है

कम्राकारा मुरारेः(ख्) करकमलतलेनानुरागाद्गृहीता

सम्यग्वृत्ता स्थिताग्रे सपदि न सहते दर्शनं(यँ) या परेषाम् ।

राजं(न्)ती दैत्यजीवासवमदमुदिता लोहितालेपनार्द्रा

कामं(न्) दीप्तां(म्)शुकां(न्)ता प्रदिशतु दयितेवास्य कौमोदकी नः ॥ 5 ॥

भगवान विष्णु की प्रिय गदा कौमोदकी, जो अपनी उज्ज्वल किरणों से सुंदर है, हमारी मनोकामनाएं पूरी करें; वह गदा जो भगवान विष्णु के हस्त-कमल में प्रेमपूर्वक पकड़ी जाती है, जो एक पूर्ण गोले के आकार की है, जो सदैव भगवान विष्णु के सामने रहती है और दूसरों को बर्दाश्त नहीं करती है, जो असुरों के जीवन का आसव या रक्त पीने से नशे में है और जो असुरों के रक्त के छींटों से सनी हुयी है

यो विश्वप्राणभूतस्तनुरपि च हरेर्यानकेतुस्वरूपो

यं(म्) सं(ञ्)चिं(न्)त्यैव सद्यः(स्) स्वयमुरगवधूवर्गगर्भाः(फ्) पतं(न्)ति ।

चं(ञ्)चच्चं(ङ्)डोरुतुं(ण्)डत्रुटितफणिवसारक्तपं(ङ्)कां(ङ्)कितस्यं(वँ)

वं(न्)दे छं(न्)दोमयं(न्) तं(ङ्) खगपतिममलस्वर्णवर्णं(म्) सुपर्णम् ॥ 6 ॥

मैं पक्षियों के राजा गरुड़ को प्रणाम करता हूँ, जो शुद्ध सोने के रंग का है और जो वेदों का अवतार है, जो इस संसार की प्राणवायु है, जो मानो हरि का (दूसरा) शरीर है, उनका वाहन और उनका ध्वज, जिसके बारे में सोचने मात्र से मादा-सर्पों का गर्भपात हो जाता है और जिसका मुंह उसकी मजबूत और सक्रिय चोंच द्वारा टुकड़े-टुकड़े किए गए नागों के खून से सना हुआ है

विष्णोर्विश्वेश्वरस्य प्रवरशयनकृत्सर्वलोकैकधर्ता

सोऽनंतः(स्) सर्वभूतः(फ्) पृथुविमलयशाः(स्) सर्ववेदैश्च वेद्यः ।

पाता विश्वस्य शश्वत्सकलसुररिपुध्वं(म्)सनः(फ्) पापहं(न्)ता

सर्वज्ञः(स्) सर्वसाक्षी सकलविषभयात्पातु भोगीश्वरो नः ॥ 7 ॥

अनंत (आदिशेष), सर्वज्ञ और हर चीज के साक्षी, हमें सांप के विष के भय से बचाएं; “अनंत” जो संसार के स्वामी विष्णु की उत्कृष्ट शय्या के रूप में सेवा करते हैं, जो अकेले ही इन सभी लोकों का भरण – पोषण करते हैं, जो सभी प्राणियों के कारण हैं, जो महान और निर्मल प्रसिद्धि वाले हैं और सभी वेदों द्वारा जानने योग्य हैं, जो सभी के रक्षक हैं , समस्त लोकों और समस्त देवताओं के शत्रुओं का संहार करने वाले तथा पापों का नाश करने वाले हैं

वाग्भूगौर्यादिभेदैर्विदुरिह मुनयो यां(यँ) यदीयैश्च पुं (म्)सां(ङ्)

कारुण्यार्द्रैः(ख्) कटाक्षैः(स्) सकृदपि पतितैः(स्) सं(म्)पदः(स्) स्युः(स्) समग्राः ।

कुं(न्)दें(न्)दुस्वच्छमं(न्)दस्मितमधुरमुखां(म्)भोरुहां(म्) सुं(न्)दरां(ङ्)गीं(वँ)

वं(न्)दे वं(न्)द्यामशेषैरपि मुरभिदुरोमं(न्)दिरामिं(न्)दिरां(न्) ताम् ॥ 8 ॥

मैं देवी लक्ष्मी को प्रणाम करता हूँ , जो सभी के लिए पूजनीय हैं और जिनका निवास मुर के संहारक भगवान् विष्णु के वक्षस्थल पर है, जिन्हें ऋषि लोग सरस्वती, धरती माता और पार्वती के रूप में विभिन्न रूपों में जानते हैं, जिनकी करुणा से भरी निगाहें जिस किसी पर भी पड़ती हैं उस व्यक्ति को सभी प्रकार की संपत्ति प्रदान करती हैं , जिनका सुंदर मुख चमेली के फूल और चंद्रमा के समान सफेद और त्रुटिहीन मुस्कान से चमकता है और जिनका शरीर सुंदर है

या सूते सत्त्वजालं(म्) सकलमपि सदा सं(न्)निधानेन पुं(म्)सो

धत्ते या तत्त्वयोगाच्चरमचरमिदं(म्) भूतये भूतजातम् ।

धात्रीं(म्) स्थात्रीं(ञ्) जनित्रीं(म्) प्रकृतिमविकृतिं(वँ) विश्वशक्तिं(वँ) विधात्रीं(वँ)

विष्णोर्विश्वात्मनस्तां(वँ) विपुलगुणमयीं(म्) प्राणनाथां(म्) प्रणौमि ॥ 9 ॥

मैं भगवान विष्णु की सत्व, रजस और तमस गुणों से युक्त पत्नी प्रकृति को नमन करता हूँ , जो पुरुष के साथ अपनी शाश्वत निकटता के द्वारा सभी प्राणियों को प्रकट करती हैं , जो पुरुष कोई और नहीं बल्कि विष्णु हैं, जो समस्त विश्व की आत्मा हैं। प्रकृति अपना सत्त्वगुण धारण करती है और सभी गतिशील और निर्जीव प्राणियों को उनके कल्याण के लिए पोषण देती है और वह सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और स्थिरता प्रदान करने वाली और सम्पूर्ण जगत के पीछे की शक्ति है

येभ्योऽसूयद्भिरुच्चैः(स्) सपदि पदमुरु त्यज्यते दैत्यवर्गैर्-

-येभो धर्तुं(ञ्) च मूर्ध्ना स्पृहयति सततं(म्) सर्वगीर्वाणवर्गः ।

नित्यं(न्) निर्मूलयेयुर्निचिततरममी भक्तिनिघ्नात्मनां(न्) नः

पद्माक्षस्यां(ङ्)घ्रिपद्मद्वयतलनिलयाः(फ्) पां(म्)सवः(फ्) पापपं(ङ्)कम् ॥ 10 ॥

कमल-नेत्र भगवान विष्णु के चरणों की धूल या चरणरज हमारे द्वारा किए गए पापों की गंदगी को जड़ से मिटा दे, जिनका हृदय उनकी भक्ति में डूबा हुआ है; वह धूल जिसे असुरों का वंश त्याग देता है क्योंकि वे जहाँ अच्छाई होती है वहाँ भी केवल बुराई ही देखते हैं और जिसे देवगण सदैव श्रद्धापूर्वक अपने सिर पर रखना चाहते हैं

रेखा लेखादिवं(न्)द्याश्चरणतलगताश्चक्रमत्स्यादिरूपाः(स्)

स्निग्धाः(स्) सूक्ष्माः(स्) सुजाता मृदुललिततरक्षौमसूत्रायमाणाः ।

दद्युर्नो मं(ङ्)गलानि भ्रमरभरजुषा कोमलेनाब्धिजायाः(ख्)

कम्रेणाम्रेड्यमानाः(ख्) किसलयमृदुना पाणिना चक्रपाणेः ॥ 11 ॥

भगवान विष्णु के पैरों के तलवों की रेखाएँ हमें शुभ वस्तुएँ प्रदान करें; वे रेखाएँ जो रेशम के मुलायम और महीन धागों के सामान कोमल, महीन, सुगठित हैं और जिन्हें लक्ष्मी के पत्तों की कलियों की तरह कोमल, नाजुक , सुंदर और चूड़ियों की खनक से युक्त हाथों द्वारा सहलाया जाता है

यस्मादाक्रामतो द्यां(ङ्) गरुडमणिशिलाकेतुदं(ण्)डायमाना

दाश्च्योतं(न्)ती बभासे सुरसरिदमला वैजयं(न्)तीव कां(न्)ता ।

भूमिष्ठो यस्तथान्यो भुवनगृहबृहत्स्तं(म्)भशोभां(न्) दधौ नः

पातामेतौ पायोजोदरललिततलौ पं(ङ्)कजाक्षस्य पादौ ॥ 12 ॥

कमल-नयन भगवान विष्णु के चरणों के हृदय-कमल के समान कोमल और नाजुक तलवे हमारी रक्षा करें। भगवान विष्णु का एक पैर (वराह अवतार में त्रिविक्रम के रूप में) जिसने स्वर्ग पर आक्रमण किया था, गहरे हरे रत्न से बने ध्वज के डंडे के रूप में चमक रहा था और स्वर्गीय गंगा, जिसमें से चमकता हुआ पानी गिर रहा था, वैजयंती माला (विष्णु द्वारा पहनी गई) के समान सुंदर था और दूसरा पैर जो पृथ्वी पर टिका हुआ था, ऐसे चमक रहा था मानो वह पृथ्वी-गृह का एक विशाल स्तंभ हो

आक्रामद्भ्यां(न्) त्रिलोकीमसुरसुरपती तत्क्षणादेव नीतौ

याभ्यां(वँ्) वैरोचनीं(न्)द्रौ युगपदपि विपत्सं(म्)पदोरेकधामः ।

ताभ्यां(न्) ताम्रोदराभ्यां(म्) मुहुरहमजितस्यां(ञ्)चिताभ्यामुभाभ्यां(म्)

प्राज्यैश्वर्यप्रदाभ्यां(म्) प्रणतिमुपगतः(फ्) पादपं(ङ्)केरुहाभ्याम् ॥ 13 ॥

मैं अजेय भगवान विष्णु के सुंदर कमल जैसे चरणों को बार-बार प्रणाम करता हूं, जिनके चरण भक्तों को असीमित धन प्रदान करते हैं, जिनके तलवे लाल रंग के होते हैं और जो तीनों लोकों पर आक्रमण (मापने) की प्रक्रिया में असुरों के राजा महाबली को कठिनाइयों के निवास (पाताल) और देवों के देव इंद्र को धन के निवास (स्वर्ग) में एक साथ एक ही समय पर भेजते हैं

येभ्यो वर्णश्चतुर्थश्चरमत उदभूदादिसर्गे प्रजानां(म्)

साहस्री चापि सं(ङ्)ख्या प्रकटमभिहिता सर्ववेदेषु येषाम् ।

प्राप्ता विश्वं(म्)भरा यैरतिविततनोर्विश्वमूर्तेर्विराजो

विष्णोस्तेभ्यो महद्भ्यः(स्) सततमपि नमोऽस्त्वं(ङ्)घ्रिपं(ङ्)केरुहेभ्यः ॥ 14 ॥

सभी सृजित प्राणियों सहित सभी संसारों के अवतार के रूप में भगवान विष्णु के लौकिक रूप में, उनके कमल-चरणों के समक्ष सदैव साष्टांग प्रणाम; वे पैर जिनसे वर्णों में अंतिम वर्ण शूद्र का जन्म हुआ, जिनके संबंध में वेद स्पष्ट रूप से कहते हैं 'उसके हजारों पैर (सहस्रपाद) हैं और जो पूरी पृथ्वी पर फैला हुआ है

विष्णोः(फ्) पादद्वयाग्रे विमलनखमणिभ्राजिता राजते या

राजीवस्येव रम्या हिमजलकणिकालं(ङ्)कृताग्रा दलाली ।

अस्माकं(वँ) विस्मयार्हाण्यखिलजनमन प्रार्थनीया हि सेयं(न्)

दद्यादाद्यानवद्या ततिरतिरुचिरा मं(ङ्)गलान्यं(ङ्)गुलीनाम् ॥ 15 ॥

भगवान विष्णु के पैरों के अंत में सुंदर और निर्मल पैर की उंगलियां हमें सभी शुभ चीजें प्रदान करें जो अद्भुत हैं और यहाँ तक कि ऋषियों द्वारा भी प्रार्थना की गई है; जिनके पैर की उंगलियां निष्कलंक रत्नों के समान चमकती हैं और बूंदों से सुशोभित कमल की पंखुड़ियों के समान सुंदर हैं

यस्यां(न्) दृष्ट्वामलायां(म्) प्रतिकृतिममराः(स्) सं(म्)भवं(न्)त्यानमं(न्)तः(स्)

सें(न्)द्राः(स्) सां(न्)द्रीकृतेर्ष्यास्त्वपरसुरकुलाशं(ङ्)कयातं(ङ्)कवं(न्)तः ।

सा सद्यः(स्) सातिरेकां(म्) सकलसुखकरीं(म्) सं(म्)पदं(म्) साधयेन्नश्-

-चं(ञ्)चच्चार्वं(म्)शुचक्रा चरणनलिनयोश्चक्रपाणेर्नखाली ॥ 16 ॥

सुंदर किरणें बिखेरते चक्रपाणि (विष्णु) के चरण-कमलों के नाखून हमें शीघ्र सभी सुख-सुविधाएं प्रदान करने वाली प्रचुर संपत्ति प्रदान करें ; साष्टांग प्रणाम करते समय उन निष्कलंक और निर्मल नाखूनों में जिनमें अपना प्रतिबिम्ब दिखता है, अपना ही प्रतिबिम्ब देख कर इंद्र सहित देवगण ईर्ष्या और भय से अभिभूत हो जाते हैं और यह सोचकर भ्रमित हो जाते हैं कि ये प्रतिबिम्ब वास्तव में देवताओं के एक अन्य कुल के हैं और (उन्हें भगवान द्वारा पहले ही सुरक्षा प्रदान की जा चुकी है)

पादां(म्)भोजन्मसेवासमवनतसुरव्रातभास्वत्किरीट-

-प्रत्युप्तोच्चावचाश्मप्रवरकरगणैश्चिं(न्)तितं(यँ) यद्विभाति ।

नम्रां(ङ्)गानां(म्) हरेर्नो हरिदुपलमहाकूर्मसौं(न्)दर्यहारिच्-

-छायं(म्) श्रेयः(फ्) प्रदायि प्रपदयुगमिदं(म्) प्रापयेत्पापमं(न्)तम् ॥ 17 ॥

भगवान विष्णु के चरणों का ऊपरी भाग हमें सभी अच्छी चीजें प्रदान करें और हमारे पापों को मिटा दें; वे भाग जो गहरे हरे रंग के रत्न से बने अपने खोल के साथ एक बड़े कछुए की पीठ से भी अधिक सुंदर हैं, जो उन देवताओं के चमकते मुकुटों में स्थापित विभिन्न प्रकार के रत्नों से निकलने वाले बहु-रंगों में प्रकाशित होते हैं , जो भगवान विष्णु के चरण कमलों में झुकने और उनकी पूजा करने आये हैं

श्रीमत्यौ चारुवृत्ते करपरिमलनानं(न्)दहृष्टे रमायाः(स्)

सौं(न्)दर्याढ्यें(न्)द्रनीलोपलरचितमहादं(ण्)डयोः(ख्) कां(न्)तिचोरे ।

सूरीद्रैः(स्) स्तूयमाने सुरकुलसुखदे सूदितारातिसं(ङ्)घे

जं(ङ्)घे नारायणीये मुहुरपि जयतामस्मदं(म्)हो हरं(न्)त्यौ ॥ 18 ॥

भगवान विष्णु के निचले पैर (पिंडली) हमारे पापों को छीन लें; जिसके बाल लक्ष्मी के हाथों के दुलार से अति प्रसन्न होकर खड़े हो जाते हैं, जो नीले रत्नों की सुंदर और उत्कृष्ट चमक वाली छड़ों के समान हैं, जिनकी बुद्धिमान लोग प्रशंसा करते हैं, जो देवताओं को सुख और आनंद प्रदान करते हैं और जो शत्रुओं के समूहों को नष्ट कर देते हैं । नारायण (विष्णु) के उन सुंदर और पूर्ण गोलाकार पैरों (पिंडिलयों) की बार-बार जय।

सम्यक्साह्यं(वँ) विधातुं(म्) सममिव सततं(ञ्) जं(ङ्)घयोः(ख्) खिन्नयोर्ये

भारीभूतोरुदं(ण्)डद्वयभरणकृतोत्तं(म्)भभावं(म्) भजेते ।

चित्तादर्शं(न्) निधातुं(म्) महितमिव सतां(न्) ते समुद्रायमाने

वृत्ताकारे विधत्तां(म्) ह्यदि मुदमजितस्यानिशं(ञ्) जानुनी नः ॥ 19 ॥

अजित (अजेय, विष्णु) के सुडौल घुटने हमें हमेशा सुख और प्रसन्नता प्रदान करें; घुटने जो भारी जाँघों को सहारा देने का काम करते हैं ताकि उन जाँघों का भार उठाने से हमेशा थके हुए पिंडलियों को मदद मिल सके और जो अच्छे लोगों के मन-दर्पण को स्थापित करने के लिए पात्र के समान हैं (जो कि ध्यान का विषय है) अच्छे और महान आत्माओं के शुद्ध दिमाग)

देवो भीतिं(वँ) विधातुः(स्) सपदि विदधतौ कैटभाख्यं(म्) मधुं(ञ्) चा-

-प्यारोप्यारूढगर्वावधिजलधि ययोरादिदैत्यौ जघान ।

वृत्तावन्योन्यतुल्यौ चतुरमुपचयं(म्) बिभ्रतावभ्रनीला-

-वूरू चारू हरेस्तौ मुदमतिशयिनीं(म्) मानसे नो विधत्ताम् ॥ 20 ॥

भगवान विष्णु की जंघायें हमारे मन को अद्भुत आनंद और ख़ुशी से भर दें; जंघायें जो सुंदर, अच्छी तरह से गोल, आकार और आकार में समान, अच्छी तरह से विकसित और बादल के समान गहरे नीले रंग की हैं, जिन पर भगवान विष्णु ने पहले असुर मधु और कैटभ को रखा और मार डाला, जिन्होंने भगवान विष्णु के कानों के मैल से उत्पन्न होते ही ब्रह्मा के मन में भय पैदा कर दिया था

पीतेन द्योतते यच्चतुरपरिहितेनां(म्)बरेणात्युदारं(ञ्)

जातालं(ङ्)कारयोगं(ञ्) जलमिव जलधेर्बाडबाग्निप्रभाभिः ।

एतत्पातित्यदान्नो जघनमतिघनादेनसो माननीयं(म्)

सातत्येनैव चेतोविषयमवतरत्पातु पीतां(म्)बरस्य ॥ 21 ॥

पीतांबरधारी भगवान विष्णु का कूल्हा (नितम्ब) हमेशा हमारे लिए चिंतन और ध्यान का विषय बना रहे और हमें हमारे गंभीर पापों से बचाए जो हमें रसातल में फेंक देते हैं; भगवान विष्णु का नितंब (कमर) सुरुचिपूर्ण ढंग से पहने गए रेशमी वस्त्रों के चमकीले पीले रंग से सुशोभित हो कर चमकता है और गहरे नीले सागर में प्रलय के दौरान चमकती आग (बड़वाग्नि) के समान प्रतीत होता है

यस्या दाम्ना त्रिधाम्नो जघनकलितया भ्राजतेऽगं(यँ) यथाब्धेर्-

-मध्यस्थो मं(न्)दराद्रिर्भुजगपतिमहाभोगसं(न्)नद्धमध्यः ।

कां(ञ्)ची सा कां(ञ्)चनाभा मणिवरकिरणैरुल्लसद्भिः(फ्) प्रदीप्ता

कल्यां(ङ्) कल्याणदात्रीं(म्) मम मतिमनिशं(ङ्) कम्ररूपां(ङ्) करोतु ॥ 22 ॥

भगवान विष्णु द्वारा नितम्ब पर धारण की गई रत्नजटित तथा अनेक रंगों की किरणें छोड़ती हुई सोने की सुंदर तथा मंगलदायक कमरबंद सदैव मेरे मन को पवित्र करती रहे; कमरबंद जिसकी डोरियों से भगवान विष्णु का नितंब गहरे नीले समुद्र के बीच में मंदार पर्वत के सामान दिखता है, जो नागों के राजा (वासुकी) के मजबूत शरीर से बंधा हुआ है

उन्नम्रं(ङ्) कम्रमुच्चैरुपचितमुदभूद्यत्र पत्रैर्विचित्रैः(फ्)

पूर्वं(ङ्) गीर्वाणपूज्यं(ङ्) कमलजमधुपस्यास्पदं(न्) तत्पयोजम् ।

यस्मिन्नीलाश्मनीलैस्तरलरुचिजलैः(फ्) पूरिते केलिबुद्ध्या

नालीकाक्षस्य नाभीसरसि वसतु नश्चित्तहं(म्)सश्चिराय ॥ 23 ॥

हंसों की भांति हमारे मन लंबे समय तक कमल-नेत्र भगवान विष्णु की सुगठित और सुंदर नाभि-सरोवर पर ध्यान केंद्रित करें, जो भगवान विष्णु के शरीर से निकलने वाली गहरी नीली लहरदार किरणों के कारण गहरे नीले पानी से भरा हुआ प्रतीत होता है; नाभि से बहुरंगी पंखुड़ियों वाला कमल निकला, जिसकी देवताओं ने पूजा की और जो कमल पर मंडराने वाली मधुमक्खी के समान ब्रह्मा जी का निवास स्थान बन गया

पातालं(यँ) यस्य नालं(वँ) वलयमपि दिशां(म्) पत्रपं(ङ्)क्तीर्नगें(न्)द्रान्-

-विद्वां(म्)सः(ख्) केसरालीर्विदुरिह विपुलां(ङ्) कर्णिकां(म्) स्वर्णशैलम् ।

भूयाद्गायत्स्वयं(म्)भूमधुकरभवनं(म्) भूमयं(ङ्) कामदं(न्) नो

नालीकं(न्) नाभिपद्माकरभवमुरु तन्नागशय्यस्य शौरेः ॥ 24 ॥

भगवान विष्णु की नाभि-सरोवर से उत्पन्न कमल, जिनके शय्या पर आदिशेष सर्प है, हमारी मनोकामनाएं पूर्ण करें; कमल जिसके तने की जड़ पाताल में है, जिसकी पंखुड़ियाँ चौथाई भाग हैं, जिसकी पत्तियाँ पर्वत हैं, जिसका तंतुओं सहित मध्य भाग मेरु का स्वर्ण पर्वत है, जो कमल पर स्थित मधुमक्खी के समान ब्रह्माजी का निवास है और जो पृथ्वी का रूप ले लेता है

आदौ कल्पस्य यस्मात्प्रभवति विततं(वँ) विश्वमेतद्विकल्पैः(ख्)

कल्पां(न्)ते यस्य चां(न्)त प्रविशति सकलं(म्) स्थावरं(ञ्) जंगमं(ञ्) च ।

अत्यं(न्)ताचिं(न्)त्यमूर्तेश्चिरतरमजितस्यां(न्)तरिक्षस्वरूपे

तस्मिन्नस्माकमं(न्)तः(ख्) करणमतिमुदा क्रीडतात्क्रोडभागे ॥ 25 ॥

मेरा हृदय-हंस दामोदर (विष्णु) के उदर-सागर में लंबे समय तक खेलता रहे, जो प्रलय के समय अग्नि के समान उज्ज्वल सुनहरे कमरबंद जैसे आभूषण से सुशोभित है, जो गहरे नीले रंग की चमक के कारण पानी

से भरा हुआ दिखाई देता है। शरीर, जो लहरदार सिलवटों से चमकता है और जो भँवर के समान गहरी नाभि के साथ सुंदर है

कां(न्)त्यं(म्)भः(फ्) पूरपूर्णे लसदसितवलीभं(ङ्)गभास्वत्तरं(ङ्)गे

गं(ङ्)भीराकारनाभीचतुरतरमहावर्तशोभिन्युदारे ।

क्रीडत्वानद्धहेमोदरनहनमहाबाडबाग्निप्रभाढ्ये

कामं(न्) दामोदरीयोदरसलिलनिधौ चित्तमत्स्यश्चिरं(न्) नः ॥ 26 ॥

भगवान विष्णु के मध्य भाग (नाभि से वक्षस्थल तक) में एक रेखा बनाने वाले सुंदर बालों के समूह से ऐसा आभास होता है कि यह भगवान विष्णु के मुख-कमल की ओर बढ़ते हुए मधुमक्खियों से बनी एक माला है जो नाभि में स्थित कमल की सुगंध से आकर्षित होती है। भगावन विष्णु के बालों का यह समूह सदैव हमारे मन में बना रहे और हमें उचित धन प्रदान करे

नाभीनालीकमूलादधिकपरिमलोन्मोहितानामलीनां(म्)

माला नीलेव यां(न्)ती स्फुरति रुचिमती वक्त्रपद्मोन्मुखी या ।

रम्या सा रोमराजिर्महितरुचिकरी मध्यभागस्य विष्णोश्-

-चित्तस्था मा विरं(म्)सीच्चिरतरमुचितां(म्) साधयं(न्)ती श्रियं(न्) नः ॥ 27 ॥

हमारे हृदय आनंद से परिपूर्ण होकर अजित और अजेय भगवान् विष्णु के वक्षस्थल के निचले हिस्से पर खेलें, जिनका रूप मन की समझ से परे है और अंतरिक्ष के समान है, जहाँ से कल्प की शुरुआत में ये सभी संसार अपनी बहुलता के साथ प्रकट होते हैं और जिसमें कल्प के अंत में ये सभी चल और अचर चीजें विलीन हो जाती हैं

सं(म्)स्तीर्णं(ङ्) कौस्तुभां(म्)शुप्रसरकिसलयैर्मुग्धमुक्ताफलाढ्यं(म्)

श्रीवत्सोल्लासि फुल्लप्रतिनववनमालां(ङ्)कि राजद्भुजां(न्)तम् ।

वक्षः(श्) श्रीवृक्षकां(न्)तं(म्) मधुकरनिकरश्यामलं(म्) शार्ङ्गपाणेः(स्)

सं(म्)साराध्वश्रमार्तैरुपवनमिव यत्सेवितं(न्) तत्प्रपद्ये ॥ 28 ॥

मैं भगवान् विष्णु के वक्षस्थल में शरण लेता हूँ जो उन लोगों के लिए आराम करने के लिए एक उद्यान की भांति है जो इस संसार के मार्ग पर चलते-चलते थक गए हैं। इस उद्यान में कौस्तुभ मणि से निकलने वाली लाल किरणें कोमल पत्तियाँ हैं। सुंदर मोतियों का हार फलों जैसा दिखता है। हर जंगल से चुने गए फूलों की वनमाला उद्यान में पूरी तरह से खिले फूलों के समान दिखती है। यह उद्यान लक्ष्मी के वृक्ष से सुन्दर दिखता है और मधु मक्खियों के झुण्ड के कारण अंधकारमय प्रतीत होता है

कां(न्)तं(वँ) वक्षो नितां(न्)तं(वँ) विदधदिव गलं(ङ्) कालिमा कालशत्रो-

-रिं(न्)दोर्बिं(म्)बं(यँ) यथां(ङ्)को मधुप इव तरोर्मं(ञ्)जरीं(म्) राजते यः ।

श्रीमान्नित्यं(वँ) विधेयादविरलमिलितः(ख्) कौस्तुभश्रीप्रतानैः

श्रीवत्सः(श्) श्रीपतेः(स्) स श्रिय इव दयितो वत्स उच्चैः(श्) श्रियं(न्) नः ॥ 29 ॥

भगवान् विष्णु का श्रीवत्स चिह्न, जो लक्ष्मी को उसी समान प्रिय है जैसे गाय को उसका बछड़ा प्रिय होता है, हमें प्रचुर धन प्रदान करें; जो श्रीवत्स का चिह्न उनके सुंदर वक्षस्थल के उस स्थान को जहाँ वो स्थित है , काल के शत्रु भगवान शिव की गर्दन के समान काला कर देता है , जो श्रीवत्स का चिह्न चंद्रमा पर स्थित काले धब्बे के समान और फूल पर स्थित काली मधुमक्खी के चिह्न की भांति प्रतीत होता है और जो कौस्तुभ मणि की उज्ज्वल किरणों के निरंतर मिश्रण से सुंदर दिखाई देता है

संं(म्)भूयां(म्)भोधिमध्यात्सपदि सहजया यः(श्) श्रिया सं(न्)निधत्ते

नीले नारायणोरः(स्) स्थलगगनतले हारतारोपसेव्ये ।

आशाः(स्) सर्वाः(फ्) प्रकाशा विदधदपिदधच्चात्मभासान्यतेजास्-

-याश्चर्यस्याकरो नो द्युमणिरिव मणिः(ख्) कौस्तुभः(स्) सोऽस्तुभूत्यै ॥ 30 ॥

भगवान् विष्णु का अद्भुत और सूर्य के समान दीप्तिमान कौस्तुभ रत्न हम पर धन की वर्षा करे; कौस्तुभ जो लक्ष्मी के साथ क्षीर सागर से प्रकट हुआ और भगवान विष्णु के वक्षस्थल के आकाश में रहता है, जो रत्नों के हार से सुशोभित है, जिसमें सितारों की भांति कांति और चमक है, जो सभी दिशाओं को उज्ज्वल करता है और जो अपनी चमक से अन्य चमकदार वस्तुओं की चमक को ढक देता है

या वायावानुकूल्यात्सरति मणिरुचा भासमाना समाना

साकं(म्) साकं(म्)पमं(म्)से वसति विदधती वासुभद्रं(म्) सुभद्रम् ।

सारं(म्) सारं(ङ्)गसं(ङ्)घैर्मुखरितकुसुमा मेचकां(न्)ता च कां(न्)ता

माला मालालितास्मान्न विरमतु सुखैर्योजयं(न्)ती जयं(न्)ती ॥ 31 ॥

भगवान् विष्णु की वैजयंती माला, जो माँ लक्ष्मी द्वारा सहलाई गई है, हमें आनंद और आराम देना कभी बंद न करे; वैजयंती जो बहती हवा के साथ चलती है, जो अतुलनीय रूप से उज्ज्वल और सुंदर है, जो भगवान विष्णु के कंधों पर बैठकर उन्हें सुशोभित करती है, जिसके फूल मधु मक्खियों के झुंड की गुंजन ध्वनि से घिरे होते हैं और जो काले फूलों से सुंदर प्रतीत होती है

हारस्योरुप्रभाभिः(फ्) प्रतिनववनमालाशुभिः(फ्) प्रां(म्)शुरूपैः(फ्)

श्रीभिश्चाप्यं(ङ्)गदानां(ङ्) कबलितरुचि यन्निष्कभाभिश्च भाति ।

बाहुल्येनैव बद्धां(ञ्)जलिपुटमजितस्याभियाचामहे तद्-

-वं(न्)धार्तिं(म्) बाधतां(न्) नो बहुविहितिकरीं(म्) बं(न्)धुरं(म्) बाहुमूलम् ॥ 32 ॥

हाथ जोड़कर हम विनती करते हैं कि अजित और अजेय भगवान विष्णु के सुंदर कंधे हमें बंधन से मुक्त करें जो हमारे लिए अनगिनत कठिनाइयाँ पैदा करते हैं ; कंधे जो हार की चमक और विभिन्न वनों के फूलों से बनी वनमाला के रंगों और विभिन्न रंगों की किरणें उत्सर्जित करने वाले अंगद जैसे आभूषणों की सुंदरता और चमक से चमकते हैं

विश्वत्राणैकदीक्षास्तदनुगुणगुणक्षत्रनिर्माणदक्षाः(ख्)

कर्तारो दुर्निरूपस्फुटगुणयशसा कर्मणामद्‌भुतानाम् ।

शार्ङ्गं(म्) बाणं(ङ्) कृपाणं(म्) फलकमरिगदे पद्मशं(ङ्)खौ सहस्रं(म्)

बिभ्राणाः(श्) शस्त्रजालं(म्) मम दधतु हरेर्बाहवो मोहहानिम् ॥ 33 ॥

हरि के हाथ मेरे अज्ञान और भ्रम को दूर करें; जिन हाथों का मुख्य व्रत पूरे संसार की रक्षा करना है और जिनमें आवश्यक गुणों (वीरता, युद्ध-पर-संकट साहस आदि) के साथ एक योद्धा वर्ग (क्षत्रिय) बनाने की क्षमता है , जिनका वर्णन करना मुश्किल है, जो अद्‌भुत कर्म करने वाले हैं , जो प्रसिद्धि और गौरव लाने वाले हैं और जो धनुष, बाण, तलवार, फलक, चक्र, गदा, शंख, कमल और हजारों अन्य अस्त्रों को धारण करते हैं

कं(ण्)ठाकल्पोद्गतैर्यः(ख्) कनकमयलसत्कुं(ण्)डलोत्थैरुदारै-

-रुद्योतैः(ख्) कौस्तुभस्याप्युरुभिरुपचितश्चित्रवर्णो विभाति ।

कं(ण्)ठाश्लेषे रमायाः(ख्) करवलयपदैर्मुद्रिते भद्ररूपे

वैकुं(ण्)ठीयेऽत्र कं(ण्)ठे वसतु मम मतिः(ख्) कुं(ण्)ठभावं(वँ) विहाय ॥ 34 ॥

मेरा मन अपना आलस्य दूर करके महाविष्णु की गर्दन पर ध्यान केंद्रित करे; वह गर्दन जो अपने ऊपर सुशोभित आभूषणों से अनेक रंगों से चमकती है, सुनहरे कर्ण-गोलकों से निकलने वाली किरणों से और कौस्तुभ की चमक से चमकती है और जो भगवान विष्णु को गले लगाते समय लक्ष्मी की चूड़ियों द्वारा छोड़े गए निशानों से सुंदर दिखती है

पद्मानं(न्)दप्रदाता परिलसदरुणश्रीपरीताग्रभागः(ख्)

काले काले च कं(म्)बुप्रवरशशधरापूरणे यः(फ्) प्रवीणः ।

वक्त्राकाशां(न्)तरस्थस्तिरयति नितरां(न्) दं(न्)ततारौघशोभां(म्)

श्रीभर्तुर्दं(न्)तवासोद्‌युमणिरघतमोनाशनायास्त्वसौ नः ॥ 35 ॥

विष्णु के होठों का सूर्य हमारे पापों के अंधकार को मिटा दे; वे होंठ जो लक्ष्मी को प्रसन्न करते हैं, जो अपने किनारों पर सुंदर लाल रंग से चमकते हैं, जो चंद्रमा के समान शंखों के राजा पांचजन्य को बार-बार बजाने में माहिर हैं और जो मुंह के आकाश में रहकर सितारों के समान चमकने वाले दांतों की चमक को छिपाते हैं

नित्यं(म्) स्नेहातिरेकान्निजकमितुरलं(वँ) विप्रयोगाक्षमा या

वक्त्रें(न्)दोरं(न्)तराले कृतवसतिरिवाभाति नक्षत्रराजिः ।

लक्ष्मीकां(न्)तस्य कां(न्)ताकृतिरतिविलसन्मुग्धमुक्तावलिश्रीर्-

-दं(न्)ताली सं(न्)ततं(म्) सा नतिनुतिनिरतानक्षतात्रक्षतान्नः ॥ 36 ॥

मोतियों की भांति सुंदर और चमकदार लक्ष्मी के पति भगवान विष्णु के दांतों की सुंदर पंक्तियाँ, सदैव हमारी रक्षा करें जो हमेशा (उनके चरणों में) झुकने और (उनकी) स्तुति करने में लगे रहते हैं; दाँत जो तारों

के समान प्रतीत होते हैं जिन्होंने अपने प्रेमी चंद्रमा (विष्णु के मुख) के प्रति गहरे प्रेम के कारण विष्णु के मुख के भीतर अपना स्थान बना लिया है

ब्रह्मन्ब्रह्मण्यजिह्मां(म्) मतिमपि कुरुषे देव सं(म्)भावये त्वां(म्)

शं(म्)भो शक्र त्रिलोकीमवसि किममरैर्नारदाद्याः(स्) सुखं(वँ) वः ।

इत्थं(म्) सेवावनम्रं(म्) सुरमुनिनिकरं(वँ) वीक्ष्य विष्णोः(फ्) प्रसन्नस्-

-यास्यें(न्)दोरास्रवं(न्)ती वरवचनसुधाह्लादयेन्मानसं(न्) नः ॥ 37 ॥

हे ब्रह्मा ! क्या आप अपने मन को ब्रह्म, परम सत्य के एकाग्र ध्यान में लगाते हैं? "हे शम्भू! मैं आपका सम्मान करता हूँ और आपका स्वागत करता हूं।" "हे इंद्र! क्या आप देवगणों सहित तीनों लोकों की रक्षा करते हैं?" "हे नारद और अन्य लोगों! क्या आप ठीक और खुश हैं?" – विष्णु के चंद्रमा जैसे मुख से निकले देवताओं और ऋषियों को संबोधित अमृत में डूबे ये शब्द हमारे दिलों को प्रसन्न करें

कर्णस्थस्वर्णकम्रोज्ज्वलमकरमहाकुं(ण्)डलप्रोतदीप्यन्-

-माणिक्यश्रीप्रतानैः(फ्) परिमिलितमलिश्यामलं(ङ्) कोमलं(यँ) यत् ।

प्रोद्यत्सूर्यां(म्)शुराजन्मरकतमुकुराकारचोरं(म्) मुरारेर्-

-गाढामागामिनीं(न्) नः(श्) शमयतु विपदं(ङ्) गं(ण्)डयोर्मं(ण्)डलं(न्) तत् ॥ 38 ॥

मुरारी (विष्णु) के गाल , भविष्य में उत्पन्न होने वाली हमारी सभी कठिनाइयों को रोकें; गाल , जो कानों में पहने जाने वाले सुनहरे मछली के आकार के कुंडलों में स्थापित माणिक्य के गहरे लाल रंग को प्रतिबिंबित करते हैं, जो सुंदर गहरे नीले रंग के हैं और जो चमकते हैं और उगते सूरज की किरणों को प्रतिबिंबित करने वाले हरे रत्न के दर्पण की सुंदरता से भी परे हैं

वक्त्रां(म्)भोजे लसं(न्)तं(म्) मुहुरधरमणिं(म्) पक्वबिं(म्)बाभिरामं(न्)

दृष्ट्वा द्रष्टुं(म्) शुकस्य स्फुटमवतरतस्तुं(ण्)डदं(ण्)डायते यः ।

घोणः(श्) शोणीकृतात्मा श्रवणयुगलसत्कुं(ण्)डलोस्रैर्मुरारेः(फ्)

प्राणाख्यस्यानिलस्य प्रसरणसरणिः(फ्) प्राणदानाय नः(स्) स्यात् ॥ 39 ॥

विष्णु की नाक जो प्राण नामक वायु को अंदर लेने और छोड़ने का मार्ग है, हमें जीवन का उपहार (प्राण) दे; नाक जो भगवान विष्णु के मुख कमल में चमकती है और जो जिससे यह आभास होता है कि जैसे तोते की चोंच पके हुए बिम्ब फल के समान दिखने वाले चमकीले लाल निचले होंठ तक उसको काटने के लिए पहुंच रही है , नाक जो विष्णु के कानों को सुशोभित करने वाले कर्ण-गुच्छों से लाल रंग की किरणों को प्रतिबिंबित करता है

दिक्कालौ वेदयं(न्)तौ जगति मुहुरिमौ सं(ञ्)चरं(न्)तौ रवीं(न्)दू

त्रैलोक्यालोकदीपावभिदधति ययोरेव रूपं(म्) मुनीं(न्)द्राः ।

अस्मानब्जप्रभे ते प्रचुरतरकृपानिर्भरं(म्) प्रेक्षमाणे

पातामाताम्रशुक्लासितरुचिरुचिरे पद्मनेत्रस्य नेत्रे ॥ 40 ॥

कमल-नेत्र (विष्णु) की आंखें हमारी रक्षा करें; ऋषियों ने जिन आँखों को सूर्य और चंद्रमा कहा है जो दिन-रात इस संसार का चक्कर लगाते हैं और हमें अंतरिक्ष और समय का ज्ञान देते हैं और तीनों लोकों को प्रकाश प्रदान करते हैं, जो कमल की भांति चमकते हैं, जिनकी दृष्टि करुणा से परिपूर्ण होती है और जो हल्के लाल, सफेद और काले रंग से युक्त होकर सुंदर लगती हैं

पातात्पातालपातात्पतगपतिगतेर्भ्रूयुगं(म्) भुग्नमध्यं(यँ)

येनेषच्चालितेन स्वपदनियमिताः(स्) सासुरा देवसं(ङ्)घाः ।

नृत्यल्लालाटरं(ङ्)गे रजनिकरतनोरर्धखं(ण्)डावदाते

कालव्यालद्वयं(वँ) वा विलसति समया वालिकामातरं(न्) नः ॥ 41 ॥

लक्ष्मी के स्वामी भगवान विष्णु की भौहें हमारी रक्षा करें; भौंहें जो मूक मधुमक्खी के पंखों की भांति दिखती हैं, जो चन्द्रमा के चिह्न के समान प्रतीत होने वाले घुंघराले वालों से युक्त माथे के अर्धचंद्र को देखकर बंद कमल-नेत्रों को खोलने के लिए उत्सुक हैं , जो अर्ध धनुष के समान जिससे विष्णु के दृष्टिबाण देवताओं को लक्ष्य करके छोड़े जाते हैं और जो प्रचुर धन उत्पन्न करने में सक्षम हैं

लक्ष्माकारालकालिस्फुरदलिकशशां(ङ्)कार्धसं(न्)दर्शमीलन्-

-नेत्रां(म्)भोजप्रबोधोत्सुकनिभृततरालीनभृं(ङ्)गच्छटाभे ।

लक्ष्मीनाथस्य लक्ष्यीकृतविबुधगणापां(ङ्)गबाणासनार्धच्-

-छाये नो भूरिभूतिप्रसवकुशलते भ्रूलते पालयेताम् ॥ 42 ॥

पक्षियों के राजा गरुड़ पर सवार विष्णु की भौहें हमें पाताल लोक में गिरने से बचाएं; भौहें जो मध्य में धनुषाकार होती हैं, जिनकी थोड़ी सी हलचल से देवता और असुर दोनों अपने-अपने स्थान पर नियुक्त हो जाते हैं और जो सर्पों की माँ के समान दिख रही घुंघराले काले केशों से युक्त शुद्ध और सफ़ेद अर्धचंद्र के समान माथे पर नृत्य करते हुए दो काले सर्पों के बच्चों के समान दिखती हैं

रूक्षस्मारेक्षुचापच्युतशरनिकरक्षीणलक्ष्मीकटाक्ष-

-प्रोत्फुल्लत्पद्ममालाविलसितमहितस्फाटिकैशानलिं(ङ्)गम् ।

भूयाद्भूयो विभूत्यै मम भुवनपतेर्भ्रूलताद्वं(न्)द्वमध्या-

-दुत्थं(न्) तत्पुं(ण्)ड्रमूर्ध्वं(ञ्) जनिमरणतमः(ख्) खं(ण्)डनं(म्) मं(ण्)डनं(ञ्) च ॥ 43 ॥

भगवान विष्णु की दोनों भौंहों के मध्य से उठने वाला ऊर्ध्वपुण्ड्र (वैष्णवों के माथे पर गोपीचंदन का चिन्ह) हमें पुनः धन प्रदान करें; ऊर्ध्वपुण्ड्र जो भगवान विष्णु के माथे को सुशोभित करता है , जो जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ता है और जो शुद्ध स्फटिक के एक पवित्र शिव लिंग के समान प्रतीत होता है, जो कामदेव के गन्ने के धनुष से निकले तीरों से टकराने के बाद लक्ष्मी की कटाक्ष या दृष्टि के समान कमल पुष्पों से निर्मित एक माला द्वारा पुनर्जीवित हो गया था

पीठीभूतालकां(न्)ते कृतमकुटमहादेवलिं(ङ्)गप्रतिष्ठे

लालाटे नाट्यरं(ङ्)गे विकटतरतटे कैटभारेश्चिराय ।

प्रोद्घाट्यैवात्मतं(न्)द्रीप्रकटपटकुटीं(म्) प्रस्फुरं(न्)तीं(म्) स्फुटां(ङ्)गं(म्)

पट्वीयं(म्) भावनाख्यां(ञ्) चटुलमतिनटी नाटिकां(न्) नाटयेन्नः ॥ 44 ॥

बुद्धि की चतुर नर्तकी, अपने आलस्य का पर्दा हटाकर, अपने सुगठित अंगों से चमकती हुई कल्पना को मस्तक द्वारा निर्मित उस नृत्य मंच पर नृत्य करने पर मजबूर कर दे, जो माथे और माथे पर गिरने वाले घुंघराले बालों के निचले गुच्छे से बनता है जिस पर मुकुट रखा जाता है जो शिव लिंग की स्थापना जैसा दिखता है

मालालीवालिधाम्नः(ख्) कुवलयकलिता श्रीपतेः(ख्) कुं(न्)तलाली

कालिं(न्)द्यारुह्य मूर्ध्नो गलति हरशिरः(स्) स्वर्धुनीस्पर्धया नु ।

राहुर्वा याति वक्त्रं(म्) सकलशशिकलाभ्रां(न्)तिलोलां(न्)तरात्मा

लोकैरालोक्यते या प्रदिशतु सततं(म्) साखिलं(म्) मं(ङ्)गलं(न्) नः ॥ 45 ॥

भगवान विष्णु की मधु मक्खियों के झुण्ड के समान दिखने वाली काली जटाएँ हमें सब कुछ शुभ प्रदान करें; जटाएं जो नीले कुमुदिनी के पुष्पों से बनी मालाओं के समूह का आभास देती हैं, जिससे यह संदेह होता है कि काली नदी यमुना ऊपर चढ़ गई है और शिव की जटाओं में स्थित स्वर्गीय गंगा से प्रतिस्पर्धा करने के लिए जटाओं के रूप में नीचे की ओर बह रही है और जिसके बारे में लोग कल्पना करते हैं , जैसे राहु (जो काला है) यह सोचकर मुख की ओर बढ़ रहा है कि यह पूर्ण चंद्र है

सुप्ताकाराः(फ्) प्रसुप्ते भगवति विबुधैरप्यदृष्टस्वरूपा

व्याप्तव्योमां(न्)तरालास्तरलमणिरुचा रं(ञ्)जिताः(स्) स्पष्टभासः ।

देहच्छायोद्गमाभा रिपुवपुरगुरुप्लोषरोषाग्निधूम्याः(ख्)

केशाः(ख्) केशिद्विषो नो विदधतु विपुलक्लेशपाशप्रणाशम् ॥ 46 ॥

केशी के शत्रु भगवान विष्णु के केश हमारे दुःख के सभी कारणों को नष्ट कर दें (पंच क्लेश – अविद्या (अज्ञान), अस्मिता (अहंकार, स्वामित्व), राग (लगाव), द्वेष (घृणा), अभिनिवेश (बुढ़ापे का डर और मृत्यु); जब भगवान गहरी नींद में होते हैं तो वे जटाएं अदृश्य प्रतीत होती हैं, जिनका वास्तविक स्वरूप देवता भी नहीं देख पाते हैं , केश जो पूरा आकाश घेर लेते हैं, जो क्षीर सागर की लहरों द्वारा उज्ज्वल हो जाते हैं, जो विष्णु के श्याम शरीर से निकलते प्रतीत होते हैं और जो यह आभास देते हैं कि वे भगवान विष्णु के क्रोध की आग से शत्रुओं के शरीर को धूप और अगर की भांति जलाने से उत्पन्न होने वाला काला और गाढ़ा धुआं हैं

यत्र प्रत्युप्तरत्नप्रवरपरिलसद्भूरिरोचिष्प्रतान-

-स्फूर्त्यां(म्) मूर्तिर्मुरारेर्द्युमणिशतचितव्योमवद्दुर्निरीक्ष्या ।

कुर्वत्पारेपयोधि ज्वलदकृशशिखाभास्वदौर्वाग्निशं(ङ्)कां(म्)

शश्वन्नः(श्) शर्म दिश्यात्कलिकलुषतमः(फ्) पाटनं(न्) तत्किरीटम् ॥ 47 ॥

कलियुग की बुराइयों के अंधकार को तोड़ने में सक्षम भगवान विष्णु के सिर का मुकुट हमें शांति और आनंद प्रदान करे; जिस मुकुट की चमक, उसमें जड़े हुए बहुमूल्य रत्नों की किरणों के फैलने से उत्पन्न होती है, उससे मुरारी (विष्णु) के रूप को देखना बहुत मुश्किल हो जाता है, जैसे आकाश में एक समय में सैकड़ों सूर्य चमकते हैं और जिससे यह संदेह उत्पन्न होता है कि शायद यह समुद्र की सतह पर विघटन या बड़वाग्नि की अग्नि की महान प्राकृतिक चमक है (क्योंकि विष्णु का शरीर समुद्र के समान गहरा नीला है)

भ्रां(न्)त्वा भ्रां(न्)त्वा यदं(न्)तस्त्रिभुवनगुरुरप्यब्दकोटीरनेका

गं(न्)तुं(न्) नां(न्)तं(म्) समर्थो भ्रमर इव पुनर्नाभिनालीकनालात् ।

उन्मज्जन्नूर्जितश्रीस्त्रिभुवनमपरं(न्) निर्ममे तत्सदृक्षं(न्)

देहां(म्)भोधिः(स्) स देयान्निरवधिरमृतं(न्) दैत्यविद्वेषिणो नः ॥ 48 ॥

असुरों के शत्रु भगवान विष्णु का असीम शरीर-सागर हमें जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति का अमृत प्रदान करे; वह शरीर-सागर जिसमें तीनों लोकों के रचयिता ब्रह्मा लाखों वर्षों तक भटकते रहे और इसकी सीमा नहीं पा सके, (विष्णु की) नाभि से निकलने वाले कमल के डंठल के माध्यम से बाहर आए और नयी ऊर्जा के साथ एक समान संसार की रचना की

मत्स्यः(ख्) कूर्मो वराहो नरहरिणपतिर्वामनो जामदग्न्यः(ख्)

काकुत्स्थः(ख्) कं(म्)सघाती मनसिजविजयी यश्च कल्किर्भविष्यन् ।

विष्णोरं(म्)शावतरा भुवनहितकरा धर्मसं(म्)स्थापनार्थाः(फ्)

पायासुर्मां(न्) त एते गुरुतरकरुणाभारखिन्नाशया ये ॥ 49 ॥

विश्व के कल्याण के लिए और धर्म की स्थापना के लिए, अत्यधिक करुणा से भरे हृदय से प्रेरित होकर, अपनी आंशिक शक्तियों से मछली (मत्स्य), कछुआ (कूर्म), सूअर (वराह) के रूप में विष्णु के अवतार हो सकते हैं। नरसिम्हा ,वामन , जमदग्नि के पुत्र परशुराम , ककुत्स्थ (श्री राम), कंस के संहारक कृष्ण , कामदेव के विजेता बुद्ध और कल्कि का भावी अवतार मेरी रक्षा करो

यस्माद्वाचो निवृत्ताः(स्) सममपि मनसा लक्षणामीक्षमाणाः(स्)

स्वार्थालाभात्परार्थव्यपगमकथनश्लाघिनो वेदवादाः ।

नित्यानं(न्)दं(म्) स्वसं(वँ)विन्निरवधिविमलस्वां(न्)तसं(ङ्)क्रां(न्)तबिं(म्)बच्-

-छायापत्यापि नित्यं(म्) सुखयति यमिनो यत्तदव्यान्महो नः ॥ 50 ॥

वह तेज हमारी रक्षा करे जिसका वेद उपयुक्त शब्द न खोज पाने पर 'यह नहीं, यह नहीं' के निषेध के रूप में वर्णन करते हैं और शब्दों के शाब्दिक अर्थ को त्यागकर उनके अनुमानित या संकेतात्मक अर्थ को अपना लेते हैं, लेकिन फिर भी उसे ग्रहण करने में असमर्थ हैं। वेदों के शब्दों की तरह मन भी उसे समझने में असमर्थ हो जाता है जो शाश्वत आनंद की प्रकृति वाला है, स्व-प्रकाशमान, असीमित और अमर है और जो अपने शुद्ध हृदय में इसके प्रतिबिंब को देखता है और ध्यान करता है उसे प्रसन्न और आनंदित करता है

आपादादा च शीर्षाद्वपुरिदमनघं(वँ) वैष्णवं(यँ) यः(स्) स्वचित्ते

धत्ते नित्यं(न्) निरस्ताखिलकलिकलुष सं(न्)ततां(न्)तः(फ्) प्रमोदम् ।

जुह्वज्जिह्वाकृशानौ हरिचरितहविः(स्) स्तोत्रमं(न्)त्रानुपाठैस्-

-तत्पादां(म्)भोरुहाभ्यां(म्) सततमपि नमस्कुर्महे निर्मलाभ्याम् ॥ 51 ॥

हम सदैव उन लोगों के चरण कमलों में झुकते हैं, जो अपने शुद्ध हृदय में आनंद से भरे हुए हैं और बार-बार भजन और मंत्रों के जाप से और अपनी जीभ की अग्नि में हरि की दिव्य लीलाओं की आहुति देकर कलि की बुराइयों से मुक्त हो जाते हैं और जो सदैव सिर से पैर तक विष्णु के शुद्ध और पवित्र रूप का ध्यान करते हैं

मोदात्पादादिकेशस्तुतिमितिरचिता कीर्तयित्वा त्रिधाम्न

पादाब्जद्वं(न्)द्वसेवासमयनतमतिर्मस्तकेनानमेद्य ।

उन्मुच्यैवात्मनैनोनिचयकवचक पं(ञ्)चतामेत्य भानोर्-

-बिं(म्)बां(न्)तर्गोचर स प्रविशति परमानं(न्)दमात्मस्वरूपम् ॥ 52 ॥

जो व्यक्ति भगवान के चरण कमलों में पूजा करते हुए विष्णु को इस पादादिकेश स्तोत्र का आनंदपूर्वक पाठ करेगा और सिर झुकायेगा वह अपने पापों से मुक्त हो जाएगा और अपने शरीर को त्यागने के बाद सूर्य की कक्षा में प्रकट परम आनंद की अपनी प्रकृति को प्राप्त करता है

इति श्रीमत्परमहं(म्)सपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविं(न्)दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य

श्रीमच्छं(ङ्)करभगवतः(ख्) कृतौ श्रीविष्णुपादादिकेशां(न्)तवर्णनस्तोत्रं(म्) संपूर्णम् ।